CONTENTS

INDEX	page
Financial Designing: Innovations in Indian Banking Sector **Dr.Ajit Kumar Bansal**	02
A Study Of Attitude Of Upper Primary School Teachers Towards Inclusive Education **Mr. Suresh Singh Mehta, Dr. Manju Singh**	09
मेरठ मंडल के प्राथमिक स्तर पर कार्यरत बी0 टी0 सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों, विशिष्ट बी0 टी0 सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन' (डॉ0) बी0 सी0 दूबे श्री संजीव कुमार कमोद कुमार	22
विद्यार्थी जीवन में नैतिक शिक्षा का महत्व श्रीमति मनीषा टोंके	36
मूल्य शिक्षा द्वारा आचरण, शांति तथा सद्भावना का निर्माण श्री प्रिन्स परमार	41

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522

DVS International Journal of Multi-Disciplinary Research ISSN NO 2454-7522
ISSUE: 04 Vol: 1, No.4 April – June, 2016

विद्यार्थी जीवन में नैतिक शिक्षा का महत्व

मनीषा टोंके
शोधार्थी, शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विष्वविद्यालय, इन्दौर।

सारांश

प्रस्तुत शोधपत्र का शीर्षक है, **''विद्यार्थी जीवन में नैतिक शिक्षा का महत्व''**। मूल्य जीवन का आधार है। यह एक ओर जहां जीवन को प्रभावित करते हैं, वहां यह शिक्षा को भी प्रभावित करते हैं। वर्तमान में शिक्षा का अर्थ मात्र डिग्रियों का ग्रहण करना ही रह गया है ताकि एक अच्छी नौकरी पाई जा सके। इस प्रकार आज शिक्षा व्यक्ति में किसी भी प्रकार का नागरिक व नैतिक मूल्यों का संवर्धन नहीं कर पा रही। परिणामस्वरुप समाज में अपराध, गला–काट प्रतियोगिता, भौतिकवाद व व्यभिचार का जाल बिछ गया है। ऐसे में आवष्यकता है नैतिक शिक्षा की एवं विद्यार्थियों में नागरिक बोध विकसित करने की जिससे चरित्र निर्माण के लक्ष्य की प्राप्ति की जा सके।

मुख्य तथ्यः विद्यार्थी जीवन, नैतिक शिक्षा, आदर्शों,विचारों का मूल्य।

प्रस्तावना

प्रत्येक मनुष्य समाज से कुछ न कुछ ग्रहण करता है, जो कुछ ग्रहण करता है, उसको धारण करता है, उस धारण योग्य तथ्य को वह मान्यता देता है तथा उसका महत्व समझता है। यही महत्व उन आदर्शों तथा विचारों का मूल्य कहलाता है। शिक्षा में मूल्यों का अपना विशेष महत्व है, इसलिए कहा गया है कि शिक्षा जीवन का भाग है और शिक्षा में मूल्यों से संबंधित प्रश्न जीवन के मूल्यों के महान प्रष्नों से अलग नहीं रह सकते। किसी भी व्यक्ति का व्यवहार उसके मूल्यों का प्रतिबिम्ब होता है। मूल्यविहिन जीवन अर्थहीन जीवन के समान है। मूल्य निर्माण में समाज एवं परिवेश को अद्वितीय स्थान प्राप्त है चूंकि व्यक्ति समाज निरपेक्ष होकर जीवन निर्वाह नहीं कर सकता। इस संबंध में प्रसिद्ध विद्वान इमाईल दुर्खीम का मानना है कि, ''समाज का प्रभाव व्यक्ति के व्यक्तित्व के पूर्ण ताने–बाने में झलकता है। उसका भीतरी और बाहरी व्यवहार समाज की सामूहिक चेतना को दर्शाता है। इसलिये अनेक विचारकों ने समाज को एक नैतिक शक्ति माना है। नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास को बच्चे की पाठ्यचर्या का अत्यन्त महत्वपूर्ण क्षेत्र माना है, संभवतः यह आज समूचे भौतिक विकास से भी अधिक महत्वपूर्ण है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के अनुसार – शिक्षा के सम्पूर्ण कार्य को एक ही शब्द में प्रकट किया जा सकता है और वह शब्द है नैतिकता''। अर्थात् नैतिकता व नैतिक शिक्षा वह आधारभूत तत्व है जिसके बिना शिक्षा को अपूर्ण कहा जा सकता है। आज संसार जिस तीव्र गति से प्रगति कर रहा है उस रफ़्तार से यदि किसी चीज़ में सर्वथा गिरावट आई है तो वह है नैतिक मूल्यों एवं नागरिक बोध में आया तीव्र क्षरण।

सम्पूर्ण विष्व प्रगति के कई मानक स्थापित कर चुका है किन्तु सम्पूर्ण मानवता हेतु स्वमेव कई भस्मासुर भी निर्मित कर चुका है। आज अधिकाधिक विचारशील लोगों को यह विष्वास हो गया है कि यदि हम शिक्षा द्वारा उच्च कोटि की सभ्यता का निर्माण करना और उसको बनाये रखना चाहते हैं, एवं कुछ समय के बाद होने वाली पशुता के प्रदर्शन से इसकी रक्षा करना चाहते हैं तो शिक्षा को नैतिकता पर आधारित किया जाना आवष्यक है।

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

अतः यह कहा जा सकता है कि यदि मनुष्य के नैतिक पक्ष का विकास किये बिना अन्य पक्षों का विकास कर दिया जायेगा तो वह और भी अधिक खतरनाक होगा क्योंकि शिक्षित मनुष्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का प्रयोग विनाश के लिये कर लेगा इसलिये मूल्य रहित शिक्षा से तो अशिक्षा ठीक है।

प्रस्तुत शोध का औचित्य

शिक्षा का उद्देष्य विद्यार्थियों में नैतिक शिक्षा का विकास करना है ताकि छात्रों के सभी पक्षों का सर्वांगीण विकास हो सके। विद्यार्थियों के ज्ञानात्मक पक्ष को हम प्रतिवर्ष परीक्षा लेकर जांचते हैं। इसमें समस्त पाठ्यक्रम व पाठ्यचर्या का भी मूल्यांकन होता रहता है कि ये दोनों निर्धारित उद्देष्यों की प्राप्ति में सफ़ल है या नहीं। किन्तु समग्र पाठ्यक्रम की ओर ध्यान देने हेतु कोई विशेष प्रविधि नहीं अपनाई जाती अर्थात् जिस 'समझ' को जगाने का पाठ्यक्रम दावा करता है वह यथार्थ में सफ़ल हो भी जाता है अथवा नहीं। दूसरे शब्दों में जिस 'बोध' को जगाने का उद्देष्य पाठ्यक्रम में अपेक्षित है वह उसे ज्ञानात्मक व भावात्मक दोनों स्तरों पर जगाने में सक्षम हुआ भी है अथवा नहीं। कहीं यह उद्देष्य असफ़ल अथवा भ्रामक तो सिद्ध नहीं हो रहा ? इसका विष्लेषण करना अनिवार्य प्रतीत हो रहा है अर्थात् छात्रों में नैतिक मूल्य व नागरिक बोध के विकास व संचेतना में पाठ्यचर्या कहां तक सहायक सिद्ध हुआ है।

स्वतंत्रता के उपरांत भारतीय शिक्षा में कई परिवर्तन आये व कई अभी भी बाकी हैं। शिक्षा को आज आधुनिकीकरण का पर्याय माना गया है एवं इसी रुप में **राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1964–66)** में इसे परिभाषित किया गया। शिक्षा तथा राष्ट्रीय विकास को एक–दूसरे के संपूरक के रुप में देखा है। अपनी अनुशंसाओं में शिक्षा व्यवस्था की पुर्नसंरचना पर बल दिया गया एवं बाद की नीतियों एवं समितियों ने भी इसी मत को अपने–अपने तरीके से दोहराया तथा इस बात पर समय–समय पर जोर दिया गया है कि पाठ्यक्रम में बदलाव आना चाहिए किन्तु आज भी विद्यालयी पाठ्यचर्या में विद्यार्थियों को कल का नागरिक माना जाता है। सामाजिक विज्ञान की पाठ्य पुस्तकों की सहायता से पूरी औपचारिक शिक्षा के द्वारा इन्हें अच्छा नागरिक बनना सिखाया जाता है अर्थात् कहीं न कहीं विद्यार्थियों में यह भावना अप्रत्यक्ष रुप से अवष्य ही अपनी छाप छोड़ती है कि आज उनका केवल नागरिक होने की हैसियत से कोई वजूद नहीं है बल्कि उन्हें तो अच्छा नागरिक, अच्छा पड़ोसी और अच्छा मतदाता बनना है।'' दूसरे शब्दों में हम यूं कह सकते हैं कि पाठ्यचर्या अपने प्रकट एवं अप्रकट दोनों रुपों में प्रशिक्षण भी दे रही है व बोध विकसित करने वाली सूचनात्मक ज्ञान राशियां भी प्रदान करती हैं।

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522

उच्च शिक्षा में नैतिक शिक्षा की आवष्यकता

जीवन के मूल्य शैक्षिक व्यवहार में निहित होते हैं। व्यक्ति विचारों, आदर्शों तथा संस्थाओं के प्रति प्रगाढ़ता रखता है, चाहे वे प्राचीनतम ही क्यों न हों, वह उनमें संशोधन होने तक प्रतीक्षा करता है, वांछित मानवीय मूल्यों की अनुभूति की अपेक्षा करता है, अतः कहा जा सकता है कि मूल्य, जीवन की कसौटी का अर्थ करते हैं और जीवन का निर्माण करते हैं। प्राचीन भारतीय विद्वान मानते थे कि समुचित नैतिक भावना और चरित्र के अभाव में मात्र बौद्धिक उपलब्धियों का कोई महत्व नहीं है। उनकी दृष्टि से सबसे अधिक महत्वपूर्ण चीज थी – सदाचार। सदाचार की शिक्षा के द्वारा ही छात्रों में नैतिक मूल्यों का निर्माण किया जा सकता है। यदि शिक्षा छात्रों के भावी जीवन की समस्याओं के बुद्धिमतापूर्ण विष्लेषण व निर्णय करने का प्रशिक्षण नहीं दे पाती तो यह अपने एक महत्वपूर्ण उद्देष्य का तिरस्कार कर रही है। भारतीय संस्कृति में मूल्यों को प्रमुखतः चार पुरुषार्थों के रुप में लिया गया है, ये चार पुरुषार्थ हैं – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। सामाजिक संदर्भ की दृष्टि से धर्म अत्यंत व्यवहारिक एवं प्रमुख मूल्य है। धर्म अपने आप में असंख्य गुणों का समुच्चय है। बौद्ध धर्म में अष्टांग मार्ग द्वारा नैतिक मूल्यों का संपोषण किया गया। जैन धर्म द्वारा अहिंसा,

किसी को कष्ट न पहुंचाना, जियो व जीने दो, शांति, बंधुत्व, सदाचार, शाकाहार इत्यादि को प्रमुख मूल्य माना गया। इसाई धर्म ने भी सत्य, अहिंसा, भाईचारा, दूसरों की गल्तियों को क्षमा करना, परहित इत्यादि मूल्यों का अवलम्बन करके सामाजिक शांति की स्थापना की। इस्लाम धर्म द्वारा समानता और भाईचारे का संदेश दिया गया। विष्व के प्रत्येक धर्म ने सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों को मानवीय सृष्टि का आधार माना है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली के तीन अंग माने गये हैं – विद्यार्थी, शिक्षक और पाठ्यचर्या। शिक्षा प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण अंग शिक्षार्थी है जिसके अभाव में शिक्षा प्रक्रिया की कल्पना भी नहीं की जा सकती, शिक्षार्थी अपनी रुचि, रुझान व योग्यता के आधार पर सीखता है जो कि आनुवांशिकता और पर्यावरण पर निर्भर करती है। आधुनिक शिक्षा बाल केन्द्रित है इसलिये शिक्षक ही सफ़लता के लिये जरूरी है कि वह बालक के स्वभाव का पूरा–पूरा ध्यान रखे। प्राचीन युग में शिक्षक को मुख्य तथा शिक्षार्थी को गौण स्थान प्राप्त था परन्तु आज स्थिति इसके बिल्कुल भिन्न है। आज का शिक्षक उत्तरदायित्व पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है। वह समाज का निर्माता है वह अपने व्यक्तित्व के प्रभाव से बालक के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। वह विद्यार्थी को भावी जीवन के लिये तैयार करता है, उसमें नैतिक मूल्यों व नागरिक बोध का संवर्धन करता है तथा उनका चरित्र निर्माण करता है। अतः शिक्षक राष्ट्र का महत्वपूर्ण अंग भी है और निर्माता भी। शिक्षक अपना यह कार्य निष्चित पाठ्यचर्या के माध्यम से करता है। पाठ्यचर्या के अन्तर्गत बालकों को निष्चित उद्देष्यों की प्राप्ति हेतु ज्ञान की विभिन्न शाखाओं का ज्ञान कराया जाता है ताकि निष्चित उद्देष्यों की प्राप्ति की जा सके। पाठ्यचर्या द्वारा शिक्षक को ज्ञात होता है कि उसे क्या पढ़ाना है? और शिक्षार्थी को यह पता होता है कि उसे क्या सीखना है ? वास्तव में पाठ्यचर्या द्वारा ही शिक्षा के लक्ष्यों को पूरा करने की कोशिश की जाती है इसलिये इसे शिक्षा व्यवस्था का सपाट और चमकदार आईना कहा जाता है।

नैतिक शिक्षा से निम्न उद्देष्यों को प्राप्त किया जा सकता है –

1. व्यक्ति का चहुंमुखी विकास करना।
2. सम्पूर्ण समाज व राष्ट्र का विकास करना।
3. स्वस्थ ज्ञान प्रदान करना।
4. व्यवसायिक शिक्षा प्रदान करना।
5. खाली समय के उचित प्रयोग के लिये प्रशिक्षण देना।
6. अच्छे नागरिक बनाना।
7. समाज के उपयोगी सदस्य बनाना।
8. नैतिक चरित्र का विकास करना।
9. स्वास्थ्य की शिक्षा प्रदान करना।
10. स्वस्थ आदतों का का निर्माण करना।
11. मौलिक प्रक्रियाओं और पठन–लेखन, गणित, मौखिक, लिखित, अभिव्यक्ति की नींव मजबूत करना।
12. विद्यार्थियों का समाज में समायोजन बैठाना।

राधाकृष्णन आयोग (1948–49) ने नैतिक मूल्यों एवं नागरिक शिक्षा को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग माना है। आयोग के अनुसार विद्यालय स्तर पर छात्रों का नैतिक और धार्मिक सिद्धांतों को व्यक्त करने वाली कहानियां पढ़ाई जायें। छात्रों को महान व्यक्तियों की जीवनियां पढ़ाई जायें। जीवनियों में महान व्यक्तियों के उच्च विचारों और श्रेष्ठ भावनाओं का समावेश किया जाये।

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

श्री प्रकाश समिति (1959) ने नैतिक मूल्यों के विकास हेतु सुझाव दिया। विद्यार्थियों को प्राथमिक कक्षा से लेकर विष्वविद्यालय स्तर तक उपयुक्त नैतिक शिक्षा दी जाये। माध्यमिक स्तर पर छात्रों को संसार के महान धर्मों के सिद्धांतों की शिक्षा दी जाये। पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं के रुप में समाज सेवा की भावना का विकास किया जाये।

राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1964–66) ने नागरिक बोध एवं नैतिक मूल्य संबंधी शिक्षा को आवष्यक बताते हुए लिखा है कि विष्वविद्यालय स्तर पर छात्रों को व्यक्ति के सम्मान, समानता, सामाजिक न्याय, कल्याणकारी राज्य आदि की शिक्षा दी जाये। डिग्री कोर्स के प्रथम वर्ष में महान धार्मिक नेताओं की जीवनियां पढ़ाई जाये। द्वितीय वर्ष में संसार के धार्मिक ग्रंथों में से सार्वभौमिक महत्व के चुने हुए भागों को पढ़ाया जाये। तृतीय वर्ष में धर्म दर्शन की मुख्य समस्याओं का अध्ययन किया जाये।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में कहा गया है कि ''शिक्षा के द्वारा राष्ट्रीय मूल्यों को हर इन्सान की सोच और जिन्दगी का हिस्सा बनाने की कोशिश की जायेगी। इन राष्ट्रीय मूल्यों में यह बातें शामिल हैं – समान सांस्कृतिक धरोहर, लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, स्त्री–पुरुष के बीच समानता, पर्यावरण का संरक्षण, सामाजिक समता, सीमित परिवार का महत्व और वैज्ञानिक तरीके के अमल की जरूरत।''

किन्तु चिंता की स्थिति यह है कि आज शिक्षा व्यक्ति में स्वयं अपना ही मूल्य उत्पन्न नहीं कर पाती व न ही विद्यार्थियों में किसी प्रकार का नागरिक बोध जगा पाती है। अर्थात् एक नागरिक को किन–किन कर्तव्यों का ज्ञान होना चाहिये, उसका समाज व राष्ट्र का महत्वपूर्ण सदस्य होने के नाते क्या कर्तव्य विशेष होने चाहिये, इन सबके जवाब में कोई आशातीत उत्तर प्राप्त नहीं हो पाता।

केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड नीति संबंधी रिपोर्ट (1992) ने माना है कि मूल्यों की शिक्षा देते समय विषयवस्तु और पद्धति की व्यापक जानकारी होनी चाहिये। यह विद्यालयों, शैक्षिक संस्थाओं का और विशेषकर अध्यापकों का उत्तरदायित्व है कि वे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को इस भांति संचालित करें कि छात्र सही अर्थों में मूल्य शिक्षा ग्रहण कर सकें।

निष्कर्ष : उपरोक्त चर्चा से स्पष्ट है कि पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा को शामिल करके शिक्षा को मूल्योन्मुख बना सकते हैं। आज मानव समाज में कालाबाजार, भ्रष्टाचार, रिष्वतखोरी, हत्या, लूटमार, चोरी–चकारी, व्यभिचार, कामुकता भरे प्रदर्शन, अष्लील गीत, अंगों के भद्दे प्रदर्शनों का बोलबाला है। सभ्यता और फैशन के नाम पर नित नये ढंग से कामुकता का प्रसार हो रहा है। राष्ट्रीय चरित्र का प्रतिपल पतन होता जा रहा है। इन सब बुराईयों का मूल कारण है हमारी शिक्षा में नैतिक शिक्षा का अभाव। केवल नैतिकता और सदाचार के मूल्य ही शिक्षा प्रणाली में समाहित की जाने वाली मूल्य प्रणाली का आधार हो सकते हैं लेकिन रोजमर्रा की जिन्दगी की समकालीन समस्याओं के व्यवहारिकवाद पर नैतिकता और सदाचार का अंत नहीं होता, न ये उससे विमुख हो सकते हैं। यदि हम छात्रों को यह बात समझा सकें और उनके मन में यह सिद्धांत बैठा सकें कि व्यक्ति को दूसरों के साथ वैसा व्यवहार नहीं करना चाहिए, जैसा वह खुद के लिये पसंद न करता हो, तो यह एक सबसे बुनियादी मूल्य बन सकेगा। राष्ट्रवाद और समाज के प्रति निष्ठा जैसे मूल्यों का विकास करके शिक्षा को जिम्मेदार नागरिक पैदा करने की जिम्मेदारी करनी ही होगी।

संदर्भ

भटनागर, सिंह, वशिष्ठ (2005) शैक्षिक प्रबन्ध और शिक्षा की समस्याएं, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।

जोशी (2005), नैतिक शिक्षा एवं नागरिक बोध, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली।

अत्री (2005), भारत में शिक्षा का विकास, सुमित पब्लिशर्स, नई दिल्ली।

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

यादव (2006), '' सामाजिक चुनौतियां और सतत् शिक्षा, अर्जुन पब्लिकेशन, हाउस, नई दिल्ली।

शिक्षा से संबंधित विभिन्न इन्टरनेट वेबसाईटस, विभिन्न समाचार पत्र–पत्रिकाएं – दैनिक भास्कर, पत्रिका, नई दुनिया, शिक्षा विभाग एवं यू.जी.सी. से प्रकाशित शोध पत्रिकाएं।